।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण

फाल्गुन कृ.१ युगाब्द ५११६, वि.२०७४
१ फरवरी २०१८
वर्ष ३३ : अंक २०

परम सुहृद पाठक-गण,

एक मित्र को और पड़ौस के गाँव/बस्ती में सदस्य बनायें

आपका वर्ष का सदस्यता शुल्क मार्च में समाप्त हो जायेगा। आपको पाथेय-कण लगातार प्राप्त होता रहे इसके लिए कार्यकर्ता आपसे आगामी वर्ष का शुल्क लेने आयेंगे।

आपसे अनुरोध है कि कम से कम एक मित्र को पाथेय-कण का सदस्य अवश्य बनायें। अपने पड़ौसी गाँव या नगर की बस्ती में यह पत्रिका नहीं जाती तो वहाँ भी एक सदस्य बनाने का आपसे आग्रह है। इसी के साथ

जय श्रीराम।

आपका
सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष ₹ 100/- पन्द्रह वर्ष ₹1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141-2529334

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

पद्मावत ठीक तो 'ब्लेक फ्राइडे' क्यों बुरी थी?

बड़ा विचित्र लगता है, लेकिन भारत में प्रतीत होता है, कि हर चीज के दोहरे मापदण्ड हो गये हैं। यह चाहे अभिव्यक्ति की आजादी का मामला हो या समाज-सुधारों का हो, सब जगह मापदण्ड अलग-अलग हैं। जयपुर में गत २५ जन. से एक साहित्य मेला शुरु हुआ। इसके आयोजक भी 'ज्ञानी' लोग हैं और इसमें भाग भी वही ले पाते हैं जिन्हें ज्ञानी होने का प्रमाण पत्र मिला हुआ हो। इसके एक आयोजक संजय रॉय ने कहा कि विरोध जरूर प्रकट करना चाहिये, लेकिन वह कानून की सीमा में हो। इससे कौन असहमत हो सकता है। लेकिन विरोध करना भी अपना विचार प्रकट करना ही है। जैसे यह कानूनी की सीमा में होना चाहिए वैसे ही किसी विषय पर कोई टिप्पणी भी कानूनी दायरे में होनी चाहिये। अभिव्यक्ति की आजादी भी निर्बन्ध नहीं है, इसकी खुली छूट नहीं है। आपके विचारों से किसी की भावना पर चोट लगती है तो यह भी कानून का उल्लंघन है।

हमारे देश में कई फिल्मों पर रोक लगी है, कई पुस्तकों पर भी रोक लगी है, लेकिन उस समय कलात्मक स्वतंत्रता या अभिव्यक्ति की आजादी का सवाल नहीं उठा। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

* मुम्बई में हुए सिलसिलेवार बम धमाकों पर एक उत्कृष्ट पुस्तक 'ब्लेक फ्राइडे' लिखी गई थी । इसी पुस्तक पर इसी नाम की फिल्म भी बनी। इसमें बताया गया कि किस तरह अपराधी सरगना दाऊद के गुर्गों ने बम धमाकों का षड़यंत्र रचा था।

इस फिल्म पर २००४ में मुम्बई उच्च न्यायालय ने रोक लगा दी। कारण यह बताया गया कि इससे मुस्लिम समाज की भावनाओं पर ठेस लगती है।

* डॉन ब्राउन के प्रसिद्ध उपन्यास 'द दाविंसी कोड' पर इसी नाम की फिल्म २००६ में भारत में दिखाई गई। इस फिल्म पर गोवा, नागालैण्ड, पंजाब तथा तमिलनाडु की सरकारों ने रोक लगा दी। ईसाई समुदाय को आहत करने के बहाने से यह रोक लगाई गई।

किसी न्यायालय ने तब यह नहीं कहा कि यह रोक गलत है या अभिव्यक्ति की आजादी पर चोट पहुँचाती है।

* आपात-काल में एक फिल्म 'आँधी' पर रोक लगा दी गई। यह असाधारण फिल्म इसलिये प्रतिबंधित की गई कि इसकी नायिका तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी जैसी दिखती थीं।

उक्त प्रतिबंध लगाने वाली पार्टी के नेता अब विचारों की आजादी का शोर सबसे अधिक मचाते हैं।

* २००५ में एक फिल्म सिन्स (Sins) आई थी। यह अंग्रेजी में थी इसके निर्माता विनोद पाण्डे थे तथा उन्होंने इसमें अभिनय भी किया था। शिनी आहूजा, सीमा रहमानी, गौरी शंकर आदि फिल्म के अन्य कलाकार थे। **इसमें एक कैथोलिक पादरी के दुराचार की कहानी थी, जो एक सत्य घटना पर आधारित थी।**

इस फिल्म पर पूरे भारत में रोक लगा दी गई क्योंकि यह ईसाई समुदाय की भवनाओं पर चोट पहुँचाती थी। →

**यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा स वै पण्डित उच्चते।।**

सर्दी, गर्मी, भय या प्रेम, सम्पन्नता या दरिद्रता आदि सभी परिस्थितियों में भी जो अपने काम में लगा रहता है और लक्ष्य से विचलित नहीं होता, वही पण्डित अर्थात् श्रेष्ठ कार्यकर्ता है।

(महाभारत/उद्योग पर्व-३३/२४)

भगिनि निवेदिता के जन्म की सार्द्ध शताब्दी

तुम्हारी महारानी तो सीता हैं

वर्षों तक अंग्रेजी शासन के अधीन होने के कारण अधिकांश भारतवासियों में अपनी संस्कृति का स्वाभिमान लुप्त हो चुका था। उसी स्वाभिमान को जाग्रत करने हेतु अपनी छात्राओं को भगिनि निवेदिता भारत के गौरवशाली अतीत का स्मरण कराती थीं। प्रस्तुत संस्मरण इसी तथ्य को रेखांकित करता है-

एक दिन भगिनि निवेदिता ने अपने विद्यालय में छात्राओं से प्रश्न किया कि भारत की रानी कौन है? छात्राओं ने उत्तर दिया, 'महारानी विक्टोरिया'। अंग्रेज शासित भारत में इंग्लैण्ड की महारानी को वे स्वाभाविक रूप से रानी समझती थीं। यह उत्तर सुन कर भगिनि को बड़ा दुख हुआ। मानसिक गुलामी बालक-बालिकाओं तक भी पहुँच जाना कष्ट देने वाला था। दुःखी मन से उन्होंने छात्राओं से पूछा, ''*क्या वास्तव में तुम नहीं जानती कि भारत की रानी कौन है?*''

सभी बालिकाओं ने अपने सिर हिला दिये। इसके बाद स्वयं उत्तर देते हुए भगिनि निवेदिता ने कहा,- '' याद रखो इंग्लैण्ड की रानी विक्टोरिया कभी भी तुम्हारी रानी नहीं हो सकती। तुम्हारी रानी सीता हैं। सदा के लिए भारत की रानी सीता है।''

अपने कन्या विद्यालय में उन्होंने बालिकाओं को विशुद्ध भारतीयता के ही संस्कार दिये। माता सीता, द्रौपदी, महारानी लक्ष्मीबाई, चेन्नम्मा जैसी आदर्श महिलाओं के जीवन चरित्र उन कन्याओं को पढ़ाये जाते थे।

बालिकाओं की शिक्षा के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द ने निवेदिता से कहा था, कि सनातन धर्म का आदर्श- त्याग एवं सेवा से कभी भी उनका अलगाव न हो। भारत की बालिकाओं को शिक्षित करने की परम आवश्यकता है, लेकिन यह आदर्श सर्वोच्च होना चाहिए।

भगिनि निवेदिता ने मन प्राण से स्वामी जी के इस निर्देश का पालन किया। ❑

पृष्ठ ३ का शेष ...

* तमिल में बनी फिल्म 'विश्वरूपम्' पर तमिलनाडु में ही प्रतिबंध लगा दिया गया। सुप्रसिद्ध अभिनेता कमल हासन की यह फिल्म थी और इसमें तालिबानियों के अत्याचारों को दिखाया गया था। उस समय उनके पक्ष में कोई खड़ा नहीं हुआ। इसकी प्रतिक्रिया में वे हिन्दुत्व विरोधी बन गये।

* प्रसिद्ध लेखिका तस्लीमा नसरीन की पुस्तक **'लज्जा'** पर पूरे भारत में रोक लगाई गई थी। लज्जा में बांग्लादेश में हिन्दुओं पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन है। बहुत बाद में यह रोक हटा दी गई किन्तु पं.बंगाल में अब भी इस पर रोक है।

- इसी तरह सेटेनिक वर्सेज (लेखक सलमान रश्दी) पर पूरे भारत में आज भी प्रतिबंध है।

- सेकुलर सरकारों ने नास्त्रेदोम की पुस्तक 'सेंचुरीज' पर भी रोक लगा दी थी।

समझ में नहीं आता कि अभिव्यक्ति की आजादी या कलात्मक सृजन आदि के तर्क उक्त उदाहरणों पर लागू क्यों नहीं किये गये?

हैरानी और चिंता की बात यह है कि सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ भारत की न्याय व्यवस्था को बदनाम कर इसे पंगु बना देने का षड़यंत्र कर रहा है।

जिस दिन उच्चतम न्यायालय ने 'तीन तलाक' को अवैध घोषित किया, उसी दिन सुप्रीम कोर्ट तथा पूरी न्याय-व्यवस्था को कठघरे में खड़े करने की कुटिल रणनीति बन गई। चार जजों की पत्रकार वार्ता भी मुख्य न्यायाधीश पर दबाव बनाने का प्रयास था। विपक्षी दलों की मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ महाअभियोग की धमकी उक्त षड़यंत्र का ही हिस्सा है, क्योंकि अब अयोध्या मामले में सुनवाई होनी है। जब कोई व्यक्ति दबाव में होता है तो वह सही निर्णय नहीं ले पाता।

पर सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ की कैसी हठधर्मिता है कि यह निर्लज्जता के साथ न्याय-प्रक्रिया को प्रभावित करने का कुत्सित प्रयास कर रहा है। ❑

पक्ष का विचार

तभी और तब ही तुम हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो जब इस नाम को सुनते ही तुम्हारी रगों में शक्ति की विद्युत-तरंग दौड़ जाए। तभी और तब ही तुम हिन्दू कहलाने के अधिकारी हो, जब इस नाम को धारण करने वाला प्रत्येक व्यक्ति वह चाहे जिस देश का हो, वह चाहे तुम्हारी भाषा बोलता हो अथवा कोई अन्य- प्रथम मिलन में तुम्हारा सगे से सगा तथा प्रिय से प्रिय बन जाय।

- स्वामी विवेकानन्द

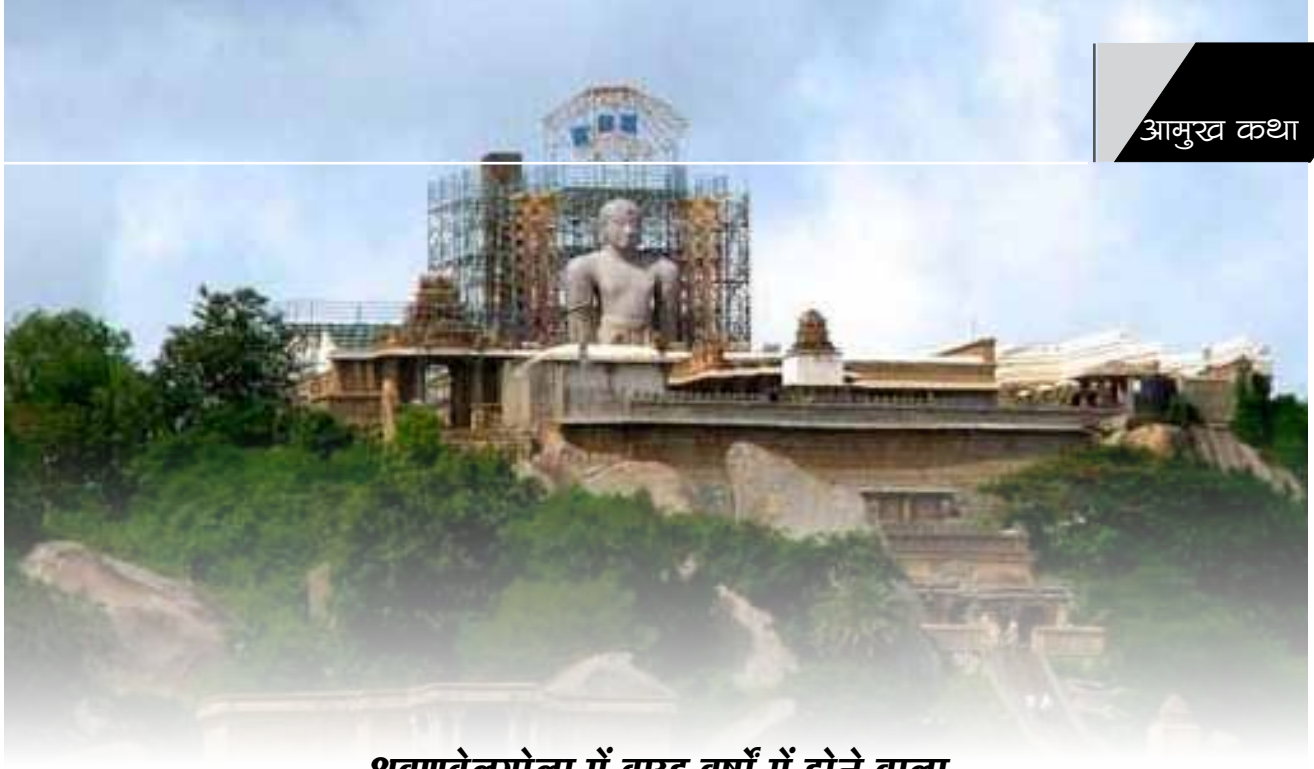

श्रवणबेलगोला में बारह वर्षों में होने वाला

महामस्तकाभिषेक और भगवान बाहुबली

बंगलूरु से लगभग १४० कि.मी. दूर पश्चिम में चेनपट्टन (हासन जिला) के पास भारत का प्रसिद्ध तीर्थस्थल श्रवणबेलगोला है। बेलगोला का अर्थ है– सफेद सरोवर और श्रवणबेलगोला का अर्थ है, श्रमणों (साधुओं) का धवल सरोवर। चन्द्रगिरि और विंध्यगिरि पहाड़ियो के बीच यहाँ ऐसा ही एक सरोवर स्थित है। प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव तथा उनके पुत्र चक्रवर्ती सम्राट भरत के धाम अर्थात् मन्दिर यहाँ हैं। आचार्य भद्रबाहु तथा उनके शिष्य बने सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य के धाम भी यहाँ हैं। इनके अतिरिक्त भी कई और मन्दिर तथा स्मारक श्रवणबेलगोला में हैं। लेकिन श्रवणबेलगोला की प्रसिद्धि तो भगवान् बाहुबली की ५७ फीट ऊँची भव्य प्रतिमा से है जो विंध्यगिरि पहाड़ी पर बिना किसी सहारे के ग्यारह सौ सालों से खड़ी हुई है।

अद्वितीय प्रतिमा– एक ही शिला–खण्ड से बनी यह विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है। इस श्वेत प्रतिमा की शोभा देखते ही बनती है। प्रातःकाल, दोपहर, सायंकाल और रात्रि में इसमें से अलग अलग रंगों की छटा प्रकट होती है। चाँदनी रातों और विशेष कर पूर्णिमा के दिन इसकी अद्‌भुत आभा मन को मोह लेती है। आज से लगभग ग्यारह सौ साल पहले गंग–वंश के सम्राट रछमल्ल के सेनापति चामुण्डराय ने इस भव्य प्रतिमा को श्रवणबेलगोला में स्थापित किया था।

ऐसी मान्यता है कि सम्राट भरत ने पोदनपुर में अपने अनुज बाहुबली की ५१५ अंगुल ऊँची स्वर्ण प्रतिमा स्थापित की थी। एक श्रावक से उक्त स्वर्ण प्रतिमा की कथा सुन कर अपनी माता की आज्ञा से चामुण्डराय इसकी खोज में निकले। काफी घूमने के बाद

अग्रज का अहंकार नष्ट किया

प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी भारत सम्राट महाराज नाभि के पुत्र थे। भागवत पुराण (पंचम स्कंध) के अनुसार वे पूरी पृथ्वी के शासक थे। अपने ज्येष्ठ पुत्र भरत के योग्य होते ही उन्होंने भरत को राजगद्‌दी सौंप कर सन्यास ले लिया और अपनी तपस्या से लोगों का कल्याण करते हुए तीर्थंकर हो गये। भरत भी अत्यंत यशस्वी हुए तथा उन्हीं के यश के कारण अपने देश का नाम भारत हुआ (भागवत–पंचम स्कंध)।

भरत चक्रवर्ती सम्राट थे। कहते हैं कि उन्हें इसका अहंकार हो गया। उनके सौ छोटे भाई और थे। बाहुबली को छोड़ कर प्रत्येक ने भरत का आधिपत्य स्वीकार कर लिया। बाहुबली ने भरत को युद्ध की चुनौती दी। दोनों भाइयों के द्वंद्व में भरत पराजित हो गये। बाहुबली ने अपने अग्रज का अहंकार नष्ट कर दिया। वे पहले से ही विरागी थे, अब वे दिगम्बर हो राज्य से निकल गये और साधना तथा लोक–कल्याण में लग गये।

बाहुबली ने श्रवणबेलगोला में ही मोक्ष प्राप्त किया। महाराज भरत ने पोदनपुर में अपने अनुज बाहुबली की स्वर्ण प्रतिमा स्थापित की। इसी प्रतिमा की खोज में निकले सेनापति चामुण्डराय को श्रवणबेलगोला में भगवान बाहुबली की प्रतिमा स्थापित करने का स्वप्न में आदेश मिला। चामुण्डराय का एक नाम 'गोमट्ट' भी था। इसलिए उनकी स्थापित की हुई बाहुबली की विशाल प्रतिमा का नाम गोमटेश्वर भी हो गया।

गुलाई माता की श्रद्धा

भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक से सम्बन्धित आठ सौ वर्ष पहले का एक प्रसंग ऐतिहासिक महत्व का है। तब भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों का आतंक शुरु हो गया था। मलिक काफूर ने दक्षिण में देवगिरि, वारंगल, द्वारसमुद्र, पाण्ड्य-राज आदि को परास्त कर भीषण अत्याचार किये। उसके लौटते ही कालमुख विद्याशंकर महाराज ने सम्पूर्ण दक्षिणापथ में एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित करने का उपक्रम शुरु किया। एक तेजस्वी युवक हरिहर को उन्होंने दक्षिणापथ को एक करने का काम सौंपा। राय हरिहर ने महामण्डलेश्वर के रूप में युगाब्द ४४३८ (ईस्वी १३३६,विक्रमी १३९३) में विजय नगर साम्राज्य की नींव डाली और दक्षिण को एक करने में जुट गये।

उस समय श्रवणबेलगोला व्यापारी वर्ग के 'वीरवणिगों'का केन्द्र था। इन श्रेष्ठियों के प्रमुख वायीजन नाम के महाश्रेष्ठि थे जिनकी सम्पत्ति का कोई पार ही नहीं था। भगवान बाहुबली के अभिषेक का समय आया तो वीर वणिगों के सारे सेवक रुष्ट हो कर चले गये। अब अभिषेक कैसे हो? ऐसे में राय हरिहर ने यह बीड़ा उठाया और अभिषेक की पूरी व्यवस्था की। भगवान बाहुबली की ५७ फीट ऊँची प्रतिमा के मस्तक तक पहुँचने के लिये विशाल मंच तैयार किया गया। वहाँ से गोमटेश्वर के मस्तक पर दूध के कलश प्रवाहित किये जाने लगे, लेकिन दूध बाहुबली के चरणों तक नहीं पहुँच रहा था। सुबह से दोपहर हुई और शाम होने लगी लेकिन दूध नीचे तक नहीं पहुँचा। तभी एक पिछड़ी कही जाने वाली वृद्धा एक लोटे में दूध ले कर आई तथा अभिषेक का आग्रह करने लगी। वह दूध जब बाहुबली के मस्तक पर डाला गया तो पतली धार के रूप में यह ठेठ प्रतिमा के चरणों तक जा पहुँचा।

पिछड़ी जाति की वृद्धा का नाम गुलाई था और उसने उदाहरण प्रस्तुत किया कि भावना और श्रद्धा महत्वपूर्ण है। इसके बाद गुलाई माता की एक प्रतिमा भगवान गोमटेश्वर के चरणों के पास ही स्थापित की गई।

भी उन्हें बाहुबली की स्वर्ण-प्रतिमा नहीं दिखी। एक रात स्वप्न में उन्हें आदेश मिला कि श्रवणबेलगोला में चन्द्रगिरि पहाड़ी से वे एक वाण छोड़ें, जहाँ वाण गिरेगा वहीं बाहुबली के दर्शन होंगे। सेनापति चामुण्डराय ने प्रातः उठ कर शर सन्धान किया तो वह सामने विंध्यगिरि पहाड़ी पर जा कर गिरा। वहाँ एक विशाल शिलाखण्ड में उन्हें भगवान बाहुबली के दर्शन हुए। उसी समय उन्होंने उस शिला से बाहुबली की प्रतिमा बनवाने का संकल्प किया।

महामस्तकाभिषेक- अनेक शिल्पियों के वर्षों के अथक परिश्रम के बाद यह दिव्य प्रतिमा तैयार हुई तथा युगाब्द ४०८२ (विक्रमी १०३७, ईस्वी ९८१) की फुलेरा दोज (फाल्गुन शु.२) को इसकी प्राण-प्रतिष्ठा हुई। प्रतिमा की विशालता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि गोमटेश्वर के पैरों के पंजों की ऊँचाई ही सवा तीन फीट है तथा प्रतिमा तीस कि.मी. की दूरी से दिखाई देने लग जाती है। प्राचीन मिश्र या यूनान में भी इतनी विशाल प्रतिमा कभी नहीं बनी।

प्राण-प्रतिष्ठा के पश्चात् प्रत्येक बारह वर्ष के बाद भगवान् बाहुबली की प्रतिमा का महामस्तकाभिषेक करना भी तय किया गया। पहला अभिषेक युगाब्द ४०९४ (विक्रमी १०४९, ईसवी ९९३) में हुआ। तब से गोमटेश्वर (बाहुबली) का अभिषेक बारह सालों के अन्तराल से होता रहा है। प्रतिमा का ८८ वाँ महामस्तकाभिषेक आगामी ७ फर. से २६ फर. तक तीर्थ-स्थल श्रवणबेलगोला में होगा।

अभिषेक समारोह का शुभारम्भ ७ फर. को होगा। ८ से १६ फर. तक बाहुबली के गर्भ-धारण, जन्म,दीक्षा, ज्ञान-प्राप्ति एवं मोक्ष के समारोह आयोजित किये जायेंगे। इन्हें पंच-कल्याणक उत्सव कहा जाता है। १७ फर. को पहला अभिषेक १०८ कलशों से किया जायेगा। अगले दिन १००८ कलशों से बाहुबली का अभिषेक होगा। १९ से २५ फर. तक प्रत्येक दिन नारियल पानी, गन्ने के रस, दूध, हल्दी, चंदन, अष्टगंध आदि से अभिषेक होंगे। २६ फर. को समस्त आयोजनों का समापन है। इस अवसर पर सम्पूर्ण देश के श्रद्धालु इस तीर्थ-स्थल पर एकत्र होंगे। सन् १९८१ में प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा के एक हजार वर्ष पूरे हुए थे। उस वर्ष भी श्रवणबेलगोला में एक भव्य आयोजन हुआ था। ❑

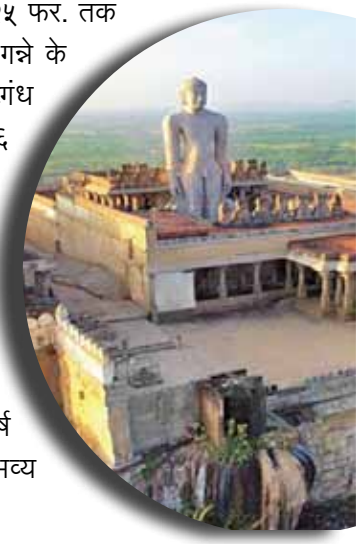

परिवार में रहना अर्थात् सामूहिकता के संस्कार लेना

आज हम देखते हैं कि सभी लोग जीवन की आपाधापी में सवेरे से देर रात तक भाग रहे हैं। परिणामस्वरूप छोटे बालक से लेकर वृद्ध तक सभी तनाव, असुरक्षा तथा चिंतित जीवन जी रहे हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सभी को प्रतिद्वन्द्वी मानना तथा किसी भी कीमत पर प्रतिद्वन्द्वियों को पछाड़ कर अधिक से अधिक धन तथा भौतिक सुख के साधन जमा करना ही मानो जीवन का अंतिम लक्ष्य है। मैं तथा मेरा से परे की सोच जाती ही नहीं है।

सौभाग्य से हिन्दू संस्कृति हमें विरासत में मिली है जिसने जीवन को धर्म के मार्ग पर चलाते हुए मोक्ष प्राप्त करने का रास्ता बताया है। हमारी सामाजिक व्यवस्था न केवल मनुष्य-मनुष्य के बीच बल्कि समस्त जीवों तथा जड़ प्रकृति के साथ भी समायोजन कर जीवन जीने की कला सिखाती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसी सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक तथा पारिवारिक व्यवस्थाओं के संस्कार अपने जीवन में अपनाकर हम तनावमुक्त, सहज तथा सुरक्षित जीवन जी सकेंगे तथा अगली पीढ़ी को भी सुसंस्कारित बना पायेंगे।

अपने जैसे अन्य जीवों के साथ रहते हुए, मैं नामक छोटेपन को पार करते हुए, हम बनने के लिए साकार की हुई व्यवस्था ही कुटुंब है। यह संस्कार, सुरक्षा, पोषण प्रदान करने वाला केन्द्र है। कुटुंब के सदस्य आपस में प्यार दुलार के साथ रहें तथा सबके सुख-दुख आपस में बाँटे तभी वे कुटुंबी कहलाने योग्य होंगे।

संयुक्त अथवा अविभक्त परिवार

कई परिवारों में तीन-तीन पीढ़ियाँ इकट्ठी जीती हैं यह संयुक्त कुटुंब का अच्छा उदाहरण है। बच्चों की शादियाँ होने पर घर आई बहुओं को भी एकत्रित जीना सिखा दिया जाता है। साथ में रहते समय अनेक कष्ट, तकलीफें मानसिक दबाव आदि का अनुभव करते हुए अन्यों के साथ मेल-मिलाप से रहकर परस्पर पूरकता का अनुभव करते हैं। आज के समय में ऐसे कुटुंब निरन्तर कम हो रहे हैं। अन्य कारणों के अलावा अध्ययन, नौकरी, उद्योग, व्यापार आदि कारणों से कई लोगों को अन्य शहरों, देशों में बसना पड़ता है। तब भी अपने घर का संबंध तथा चाल-चलन, घर में बोल चाल की भाषा, प्रातः संध्या वंदन इत्यादि अपने-अपने स्थानों पर भी करते रहते हैं। बच्चों का नामकरण विवाह आदि सभी परिवारिक/सामाजिक कार्य मूल घरों में ही सम्पन्न करने की योजना बनाते हैं। यह भी अविभक्त कुटुंब का ही विस्तार है। ❑

क्यों रहें परिवार में

* जहाँ जीव है वहाँ सामूहिक जीवन (परस्परावलम्बन) आवश्यक है।

* दूसरों के लिए परिश्रम, त्याग करने की दृष्टि तथा शक्ति विकसित करने, संतुष्टि में सहभागी होने, दुःख में सांत्वना, जीने की प्रेरणा देना ऐसे सद्गुणों का निर्माण होता है।

* धर्म की प्रतिष्ठापना, कर्तव्य के परिपालन, संस्कृति के उत्थान हेतु संस्कार केन्द्र है कुटुम्ब।

कैसा व्यवहार करें

- सबके लिए प्यार, चिंता रहनी चाहिये।
- देकर खाने तथा बांटकर खाने का स्वभाव बनायें।
- यथा-सम्भव सब मिलकर भोजन करें।
- बाहर कहीं पर कोई अच्छी वस्तु मिलने पर घर लाकर देने में सबके साथ आनन्द अनुभव करना।
- घर में किसी के बीमार होने पर उसकी सेवा करना।
- कुटुंब में हर एक की दिनचर्या भिन्न होती है, लेकिन कुछ बातें सारे परिवार को एक साथ करनी चाहिये। उदाहरण के लिये आरती के समय सब एक साथ रहें।
- स्वयं अपने तथा परिजनों में किसी के बारे में द्वेष, तिरस्कार, हिंसा का भाव उत्पन्न न होने देना।
- संयुक्त परिवार की सफलता हेतु बड़े भाइयों, बड़ी भाभियों को विवेकी, उदार बनकर सबको अपना मानते हुए व्यवहार करना चाहिये।

पूर्वांचल के महान् क्रान्तिकारी
वीर शम्भुधन फूंगलो

भारत के कोने-कोने में स्वतंत्रता के लिए प्राण देने वाले वीर हुए हैं। ग्राम लंकर (उत्तर कछार, असम) में फागुन पूर्णिमा, विक्रमी १९०६ (ईस्वी १८५०) को जन्मे शंभुधन फूंगलो भी असम के ऐसे ही क्रांतिवीर थे। शम्भुधन के पिता काम की तलाश में घूमते रहते थे। अन्ततः वे माहुर के पास सेमदिकर गाँव में बसे गये। शम्भु बचपन से ही शिवभक्त थे। एक बार वह दियूंग नदी के किनारे कई दिन तक ध्यानस्थ रहे। लोगों के शोर मचाने पर उन्होंने आँखें खोलीं और कहा कि मैं भगवान शिव के दर्शन करके ही लौटूँगा।

इसके बाद तो दूर-दूर से लोग उनसे मिलने आने लगे। वह उनकी समस्या सुनते और उन्हें जड़ी-बूटियों की दवा भी देते। उन दिनों पूर्वांचल में अंग्रेज अपनी जड़े जमा रहे थे। शम्भुधन फूंगलो लोगों को दवा देने के साथ-साथ देश और धर्म पर आ रहे संकट से भी सावधान करते रहते थे। धीरे-धीरे उनके विचारों से प्रभावित लोगों की संख्या बढ़ने लगी।

एक समय डिमासा काछारी एक सबल राज्य था। इसकी राजधानी डिमापुर थी। अंग्रेजों ने १८३२ ई. में इसे नष्ट कर दिया। उस समय तुलाराम डिमासा के राजा थे। वे अंग्रेजों के प्रबल विरोधी थे। १८५४ ई. में उनके देहान्त के बाद देश को स्वतंत्र कराने और उसके लिये संघर्ष करने की भावना और प्रबल होने लगी। शम्भुधन ने एक क्रांतिकारी दल बनाया और उसमें उत्साही युवाओं को भर्ती किया। माइबांग के रणचण्डी देवी मंदिर में इन्हें तलवार और बन्दूक चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। ये नौजवान उत्तर कछार जिले में अंग्रेजों की नाक में दम करने लगे।

उस समय वहाँ मेजर बोयाड नियुक्त था। वह बहुत क्रूर था। वह एक बार शम्भुधन को पकड़ने माइबांग गया, पर वहाँ सशस्त्र क्रांतिकारियों को देख डर गया। अब उसने १८८२ में पूरी तैयारी कर माइबांग शिविर पर हमला बोला, पर इधर क्रांतिकारी भी तैयार थे। मेजर बोयाड और सैकड़ों सैनिक मारे गये। अब लोग शम्भु को 'कमाण्डर' और 'वीर शम्भुधन' कहने लगे।

शम्भुधन ने अब अंग्रेजों की छावनियों पर हमले कर उन्हें नष्ट कर दिया तथा जिले को आजाद करा लिया। उत्तर कछार जिले की मुक्ति के बाद उन्होंने दक्षिण कछार पर ध्यान लगाया और भुवन पहाड़ पर अपना मुख्यालय बनाया। यहाँ एक प्रसिद्ध गुफा और शिव मन्दिर भी है।

इधर अंग्रेज उनके पीछे लगे थे। १२ फरवरी,१८८३ को वह अपने घर में भोजन कर रहे थे, तभी सैकड़ों अंग्रेज सैनिकों ने उन्हें घेर लिया। उस समय शम्भुधन निःशस्त्र थे। अतः वह जंगल की ओर भागे, पर एक सैनिक द्वारा फेंकी गयी खुखरी से उनका पाँव बुरी तरह घायल हो गया। अत्यधिक रक्तस्राव के कारण वह गिर पड़े। उनके गिरते ही सैनिकों ने घेर कर उनका अन्त कर दिया। इस प्रकार केवल ३३ वर्ष की छोटी आयु में वीर शम्भुधन ने मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। ❑

-विजय कुमार

जन्म दिवस पर शत्-शत् नमन

आर्य समाज की स्थापना करने वाले
महर्षि दयानन्द
फाल्गुन कृ.१० (१० फर.)

(१८२४-१८८३)

संघ के द्वितीय सरसंघचालक
श्रीगुरुजी
फाल्गुन कृ.११ (११ फर.)

(१९०६-१९७३)

असाधारण आध्यात्मिक विभूति
रामकृष्ण परमहंस
फाल्गुन शु.२ (१७ फर.)

(१८३६-१८८६)

हिन्दवी स्वराज्य के संस्थापक
शिवाजी महाराज
१९ फरवरी

(१६३०-१६८०)

अंग्रेजों से युद्ध के लिये एक सेना ही बना दी थी लहू जी साल्वे ने

मित्रों, १८५७ में भारत की स्वतंत्रता के लिये महासंग्राम हुआ। प्रमुख रूप से आज के उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश में लाखों क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों से संघर्ष किया। इसी के साथ देश के प्रत्येक कोने में क्रांतिवीरों ने फिरंगियों को देश से बाहर निकालने के लिये शस्त्र उठाये। ऐसे देशभक्तों को देश जानता ही नहीं, यह बड़े दुःख की बात है। पुणे (पूना) के पास पुरन्दर के रहने वाले लहू जी साल्वे ऐसे ही महावीर थे जिनका नाम भी आप पहली बार पढ़ रहे होंगे।

छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रसिद्ध पुरंदर किले के नीचे बसे पेठ नाम के गाँव में १४ नवम्बर १७९४ को उनका जन्म हुआ था। हिन्दवी स्वराज्य के दुर्ग पुरन्दर की हवा में ही राष्ट्रभक्ति भरी थी। शिवाजी महाराज की गाथाओं को सुन-सुन कर लहू जी बड़े हुए। उनके पिता राघो जी पेशवा की सेना में थे। उस समय फिरंगियों ने भारत में अपनी जड़ें जमानी शुरु कर दी थीं। महाराज शिवाजी के अद्‌भुत पराक्रम से बने और पेशवा बाजीराव के पुरुषार्थ से बढ़े हिन्दवी स्वराज्य की हालत तब बड़ी दयनीय हो गई थी। अटक से कटक यानी पंजाब से उड़ीसा तक फैला हिन्दवी स्वराज्य पाँच हिस्सों में बँट कर बिखर गया। ये पाँच हिस्से पेशवा, भोंसले, सिन्धिया, गायकवाड़ और होल्कर आपस में ही झगड़ते रहते थे।

मित्रों, धूर्त अंग्रेज साम, दाम,दण्ड और भेदनीति से हर एक का राज्य हड़प रहे थे। सन् १८१७ में अंग्रेजों को पेशवा बाजीराव (द्वितीय) से किरकी में युद्ध हुआ जिसमें पेशवा की हार हुई। इस युद्ध में राघोजी साल्वे ने बड़ी वीरता से युद्ध किया किन्तु वे बुरी तरह घायल हो गये। गोरे सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया और यातनायें दे कर उनकी हत्या कर दी।

लहू जी उस समय २४ साल के थे। अपने पिता के बलिदान ने उन्हें झकझोर दिया। उन्होंने उसी समय विदेशी फिरंगियों से मातृभूमि को मुक्त कराने का संकल्प कर लिया। अब सह्याद्रि की पहाड़ियों में उन्होंने डेरा जमाया और आस-पास के गाँवों के युवकों को आजादी के लिये लड़ने की भावना जगाने लगे। हर तरह हथियार चलाने में निपुण नौजवान कुछ करने के लिये उतावले थे किन्तु लहू जी ने धैर्य बनाये रखा। वे बड़ी सावधानी के साथ युवकों के संगठन का विस्तार करने लगे। ये नौजवान पूरे क्षेत्र में पीड़ितों और बेसहारा लोगों की सहायता भी करते थे। उनकी सेना में भी पिछड़ी कही जाने वाली जातियों के लोग अधिक थे।

देखते-देखते १८५७ आ गया। पूरे देश में क्रांति का संदेश देता हुआ रक्त कमल (लाल रंग का कमल का फूल) लहू जी साल्वे के पास भी पहुँचा। लहू जी ने अपनी सेना के बड़े हिस्से को तीर्थयात्रा के बहाने नाना साहब पेशवा की सहायता हेतु कानपुर (बिठूर) भेज दिया। शेष सैनिकों के साथ ३१ मई को उन्होंने अंग्रेज छावनियों पर धावा बोल दिया। उधर कानपुर, ग्वालियर, झाँसी आदि स्थानों पर हुए युद्धों में लहू जी के सैनिकों ने बड़ी बहादुरी दिखाई।

एक साल तक स्वातंत्र्य सैनिक फिरंगियों को नाकों चने चबवाते रहे। आखिर हमारे ही देश के जयचंदों की सहायता से अंग्रेजों की जीत होने लगी। नाना साहब तथा तात्या टोपे आजादी की लड़ाई में असफल होने के बाद नेपाल की ओर निकल गये। लहू जी साल्वे भी गुप-चुप नेपाल चले गये। कुछ वर्षों बाद वे स्वदेश लौटे और १७ फरवरी १८८१ को उन्होंने महाप्रयाण किया।

मित्रों पूरे महाराष्ट्र में आज भी लोग श्रद्धा के साथ लहू जी साल्वे को याद करते हैं। उद्‌भट् क्रांतिकारी वासुदेव बलवंत फड़के, महात्मा ज्योतिबा फुले तथा लोकमान्य तिलक लहू जी साल्वे से प्रेरणा प्राप्त कर राष्ट्रभक्ति के मार्ग पर आगे बढ़े। ❑

? अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

१. सीता माता को श्रीराम को लौटा देने की विभीषण की सलाह का समर्थन रावण की राज-सभा में किसने किया था?

२. अर्जुन के पुत्र इरावान की माता कौन थी?

३. एक देश में 'अष्टांग आयुर्वेद' नाम का प्राचीन ग्रन्थ मिला। उसे भारत ला कर हौज खास दिल्ली के संस्कृति अकादमी भवन में रखा गया। उक्त ग्रन्थ किस देश में मिला था?

४. देवी का महामाया नाम का शक्तिपीठ कश्मीर के किस तीर्थ-स्थल में स्थित है?

५. सभी उपनिषदों का सार रूप किस ग्रन्थ को माना जाता है?

६. मगध में शक्तिशाली शुंग वंश की स्थापना किस महावीर ने की थी?

७. न्यूटन के काफी पहले किस भारतीय गणितज्ञ ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त का वर्णन किया है?

८. महाराष्ट्र के किस प्रसिद्ध क्रांतिकारी को द्वितीय शिवाजी कहा जाता था?

९. महाराणा कुम्भा ने गुजरात के सुल्तान को हराने के बाद चित्तौड़ में क्या बनवाया?

१०. आज से अठारह सौ साल पहले मकर संक्रान्ति किस दिन आती थी?

(उत्तर इसी अंक में हैं)

गुणों का खजाना अजवाइन

आयुर्वेद के अनुसार अजवाइन गरम, कड़वी, पाचक, हृदय के लिए हितकारी, पेट दर्द, आफरा, वायु, कफ, वमन, बवासीर तथा संक्रमण रोगों में बहुत लाभदायक है। अजवाइन के कुछ घरेलू औषधीय उपयोग इस प्रकार हैं–

- **एक चम्मच पिसी अजवाइन में थोड़ा सा काला नमक मिलाकर गुनगुने पानी के साथ उसकी फांकी लेने से पेट का फूलना बन्द हो जाता है। यह प्रयोग बदहजमी, खट्टी डकारें व गैस में भी लाभकारी है।**
- थोड़ी सी अजवाइन को पीसकर तथा किसी पतले कपड़े में बांधकर सूंघने से नजला, जुकाम, सिरदर्द में आराम मिलता है।
- **अजवाइन का चूर्ण छाछ के साथ प्रतिदिन सेवन करने से पेट के कीड़े मर जाते हैं।**
- पथरी रोग व मूत्राशय में दर्द होने पर साबुत अजवाइन की एक छोटी चम्मच सुबह–शाम सादा पानी के साथ सेवन करने से लाभ होता है।
- **अधिक पुरानी कब्ज होने पर रोज रात को एक चम्मच अजवाइन चबाकर खाने से सुबह शौच खुलकर होगा और धीरे–धीरे कब्ज की समस्या भी दूर हो जायेगी तथा इससे पाचन शक्ति भी अच्छी रहेगी ।**
- दांत में दर्द होने पर दो चम्मच अजवाइन को एक गिलास पानी में उबाल कर छान लें। थोड़ा ठण्डा होने पर गुनगुने पानी से कुल्ला करें। इससे दाँत के दर्द में आराम मिलता है।

अजवाइन की महिमा

कफ से पीड़ित हों अगर
खाँसी बहुत सताय।
अजवाइन की भाप लें
कफ तब बाहर आए।।

अजवाइन को पीसिये
गाढ़ा लेप लगाए।
चर्मरोग सब दूर हों
तन कंचन बन जाए।।

अजवाइन और हींग लें
लहसुन तेल पकाय।
मालिश जोड़ों की करें
दर्द दूर हो जाए।।

अजवाइन लें छाछ संग
मात्रा पाँच ग्राम।
कीट पेट के नष्ट हों,
जल्दी हो आराम।।

अजवाइन गुड़ खाइए
तभी बने कुछ काम।
पित्त रोग में लाभ हो
पायेंगे आराम।।

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी – मंत्री माल्यवान्, नागा देश की राजकुमारी उलूपी,रूस, अमरनाथ, भगवद्गीता, पुष्यमित्र,ब्रह्मगुप्त, वासुदेव बलवंत फड़के, विजय स्तम्भ, २५ दिस. के दिन

आगामी पक्ष (१६ से २८ फरवरी २०१८) के विशेष अवसर

(फाल्गुन शुक्ल.१ से १३ तक)

जन्मदिवस

फाल्गुन शुक्ल २ (फुलेरा दौज– इस बार १७ फरवरी)– श्रीरामकृष्ण परमहंस की जयन्ती

१६ फरवरी (१६३०)– हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना करने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्मदिवस

२१ फरवरी (१८७८)– महर्षि अरविन्द की शिष्या 'श्रीमाँ' का जन्म दिवस

फाल्गुन शुक्ल ६ (इस बार २१ फरवरी)– माता शबरी की जयन्ती

फाल्गुन शुक्ल ८ (इस बार २३ फरवरी)– सन्त दादूदयालजी की जयन्ती

२३ फरवरी (१८८१)– विदेशों में भारत की आजादी के लिए संघर्ष करने वाले प्रसिद्ध क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह का जन्म दिवस

अवसर विशेष

२८ फरवरी – राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

पुण्यतिथि/बलिदान दिवस

१७ फरवरी – अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ चढ़ कर भाग लेने वाली नागालैण्ड की रानी माँ गाइदिन्ल्यु का स्मृति दिवस (१६६३), महान क्रांतिकारी वासुदेव बलवन्त फड़के की जेल में शहादत (१८८३), सशस्त्र क्रांति के नायक लहूजी साल्वे की पुण्यतिथि (१८८१)

२१ फरवरी (१६१०)– अंग्रेज पुलिस अधीक्षक शम्सुल आलम को मृत्युदण्ड देने वाले क्रांतिकारी बीरेन्द्र नाथ दत्त की शहादत

२३ फरवरी(१५६८)– अकबर के आक्रमण के समय चित्तौड़ का तीसरा साका

२४ फरवरी (१५६८)– चित्तौड़ की रक्षा में जयमल, पत्ता और कल्ला जी राठौड़ का शौर्य प्रदर्शन एवं वीरगति

२६ फरवरी (१६६६)– स्वतंत्रता आन्दोलन के सिरमौर स्वातंत्र्य वीर सावरकर की पुण्यतिथि

२७ फरवरी (१६३१)– शहीद शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद की शहादत

२८ फरवरी (१८८४)– वर्षों तक अंग्रेजों से संघर्ष करने वाले बाबूखेड़ा (उड़ीसा) में जन्मे क्रांतिकारी वीर सुरेन्द्र साई का बलिदान

समय अनमोल है

साबरमती आश्रम में एक दिन पास ही के गांव के कुछ कार्यकर्ता महात्मा गांधी से मिलने आए। उन्होंने अपने गांव में एक सभा का आयोजन किया था, जिसमें वे गांधी जी को भाषण देने के लिए आमंत्रित करना चाहते थे।

गांधी जी ने अपना दूसरे दिन का कार्यक्रम देखा और उन कार्यकर्ताओं से पूछा– आप लोगों ने कार्यक्रम कितने बजे रखा है। चार बजे का समय नियत किया गया है, कार्यकर्ताओं ने जानकारी दी। गांधी जी ने आमंत्रण स्वीकार कर लिया। जाने से पहले एक कार्यकर्ता ने कहा– बापू! मैं आपको लेने एक व्यक्ति को भेज दूंगा ताकि आपको सभा स्थल तक पहुंचने में कोई परेशानी न हो। गांधी जी ने उन्हें निश्चित समय पर तैयार रहने का आश्वासन दिया। इसके बाद कार्यकर्ता गांव वापस चले गए।

अगले दिन गांधी जी समय पर सभा में जाने के लिए तैयार थे। लेकिन पौने चार बजे के बाद भी कोई कार्यकर्ता उन्हें लेने नहीं पहुंचा। सभा का समय हो रहा था, ऐसे में वे चिंतित हो उठे कि उनके समय पर न पहुँचने से सबका समय व्यर्थ होगा।

कुछ देर बाद एक कार्यकर्ता आश्रम पहुंचा तो गांधी जी वहां नहीं मिले। उन्हें वहां न पाकर वह आश्चर्य में पड़ गया और पुनः गांव लौट आया। वहां पहुंचने पर उसने देखा कि गांधी जी सभा स्थल पर पहुँच चुके हैं और भाषण दे रहे हैं। उपस्थित सभी लोग बड़े ही ध्यान से गांधी जी को सुन रहे थे।

सभा समाप्त होने पर वह कार्यकर्ता गांधी जी के पास आकर बोला– बापू! मैं तो आपको लेने आश्रम गया था, किंतु आप मुझे वहां नहीं मिले। आप यहां कैसे आए?

गांधी जी ने उत्तर दिया, जब आप पौने चार बजे तक नहीं पहुँचे तो मैंने साइकिल उठाई और यहां आ गया। मैं अपने कारण इतने लोगों का समय व्यर्थ नहीं करना चाहता था। यह बात सुनकर कार्यकर्ता बहुत शर्मिंदा हुआ। तब गांधी जी ने उस कार्यकर्ता को समय का महत्व समझाते हुए कहा– *''सबका समय अमूल्य है, हमें इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए।''* ❑

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं

बाल मित्रों! यहाँ हमारे एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

- आपका जन्म नासिक के भगूर गांव में हुआ था।
- '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' लिखकर जिन्होंने ब्रिटिश शासन को हिलाया।
- अग्रेंज सरकार ने इनको दो जन्मों के कारावास की सजा सुनाई।

(उत्तर इसी अंक में है)

बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों! इस अंक में भारतीय संस्कृति से संबंधित दस प्रश्न पूछे जा रहे हैं। प्रश्नों के उत्तर चार विकल्पों में दिये गये हैं जिनमें से एक उत्तर सही है। इस उत्तर को ढूंढ़ो और अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा लो।

१. निम्न ज्योतिर्लिंगों में से गुजरात में कौन सा ज्योतिर्लिंग है?
(अ) सोमनाथ (ब) मल्लिकार्जुन (स) वैद्यनाथ (द) ओंकारेश्वर

२. राजस्थान में स्वामी विवेकानन्द का प्रथम आगमन किस नगर में हुआ?
(अ) जोधपुर (ब) जयपुर (स) उदयपुर (द) अलवर

३. भगिनि निवेदिता का मूल नाम क्या था?
(अ) एनी बेसेन्ट (ब) मार्गरेट नोबल (स) मार्गरेट कोर्ट (द) मारिया शारापोवा

४. समुद्र मंथन से उत्पन्न गो-रत्न का नाम क्या था?
(अ) कामधेनु (ब) नंदिनी (स) देवनी (द) कृष्णवल्ली

५. हल्दीघाटी राजस्थान के किस जिले में है?
(अ) राजसमन्द (ब) चित्तौड़ (स) उदयपुर (द) प्रतापगढ़

६. आद्य शंकराचार्य का जन्म किस प्रान्त हुआ था?
(अ) तमिलनाडु (ब) केरल (स) उड़ीसा (द) आंध्रप्रदेश

७. सूर्य मन्दिर के लिये प्रसिद्ध कोणार्क भारत के किस प्रान्त में है?
(अ) उड़ीसा (ब) राजस्थान (स) बिहार (द) मध्यप्रदेश

८. आयुर्वेद के अधिष्ठाता देव कौन माने गये हैं?
(अ) कार्तिकेय (ब) विश्वकर्मा (स) धन्वन्तरि (द) चित्रगुप्त

९. इंदोनेशिया की हवाई सेवा का नाम क्या है?
(अ) गरुड़ एअरवेज (ब) जकार्ता एअरवेज (स) जावा एअरवेज (द) दीपान्तर एअरवेज

१०. अपने देश के किस प्रांत का एक नाम कामरूप भी है?
(अ) बंगाल (ब) गुजरात (स) असम (द) अरुणाचल

(उत्तर इसी अंक में हैं)

देश का माथा ऊँचा हुआ

इसरो ने उपग्रहों का शतक बनाया

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (भा अ अ सं– इसरो) ने गत १२ जनवरी को फिर एक कीर्तिमान स्थापित किया। विश्ववंद्य स्वामी विवेकानन्द के जन्म–दिन के पुनीत अवसर पर श्री हरिकोटा प्रक्षेपण केन्द्र से भारत का सौंवाँ उपग्रह अंतरिक्ष में भेजा गया। इस शतक पूरा करने वाले उपग्रह के साथ अन्य देशों के २८ उपग्रह तथा दो 'मौसम निरीक्षक उपग्रह '(कार्टोसेट) भी आकाश में प्रक्षेपित किये गये। जिन छह अन्य देशों के उपग्रह भेजे गये, उनमें अमरीका और इंग्लैण्ड के उपग्रह भी हैं।

अंतरिक्ष विज्ञान में भारत नित नई ऊँचाइयों तक पहुँच रहा है। भाअअसं की सफलता ने दुनिया में भारत का मस्तक ऊँचा कर दिया है।

गोहाटी में पचास हजार स्वयंसेवकों ने मातृ-भूमि की वन्दना की

गत २१ जनवरी को गोहाटी के खानपाड़ा पशु चिकित्सा कॉलेज के मैदान में पचास हजार स्वयंसेवकों का एकत्रीकरण हुआ। सभी स्वयंसेवक पूरे गणवेश यानी भूरी फुलपैण्ट, सफेद कमीज, बेल्ट, जूते–मोजे और टोपी पहन कर आये थे। ये स्वयंसेवक मेघालय, नागालैण्ड तथा असम के ब्रह्मपुत्र घाटी में स्थित जिलों से आये थे।

पिछले दिनों पहली बार इतनी बड़ी संख्या में आये स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए सरसंघचालक भागवत जी ने कहा, कि भारत हिन्दू राष्ट्र है और इसकी विविधताओं को हिन्दुत्व ने एक सूत्र में बाँध रखा है। दुनिया के लोग भारत की पहचान हिन्दुत्व से करते हैं। उन्होंने कहा कि भारत के लोग यदि हिन्दुत्व को भूल जाते हैं तो इस राष्ट्र से उनका सम्बन्ध ही टूट जायेगा।

पूर्वोत्तर में संघ का काम कमजोर माना जाता है। पूरे पूर्वोत्तर को संघ के हिसाब से दो प्रांतों उत्तरी असम और दक्षिणी असम में बांटा हुआ है। दक्षिणी असम में त्रिपुरा, मणिपुर, मिजोरम तथा असम के दक्षिण के जिले हैं।

गोहाटी में उत्तरी असम का कार्यक्रम था और इतनी बड़ी संख्या में वहाँ स्वयंसेवकों का एक साथ आना हिन्दुत्व के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है।

गीता अब उर्दू भाषा और देवनागरी लिपि में

गीता प्रेस गोरखपुर ने श्रीमद्भगवद्गीता को उर्दू और देवनागरी में प्रकाशित किया है। इसमें संस्कृत के श्लोको का अनुवाद उर्दू भाषा में है, साथ ही अनुवाद की लिपि देवनागरी है। यह इसलिये किया गया है कि उर्दू बोलने वाले जो लोग उर्दू लिपि नहीं पढ़ सकते वे देवनागरी में पढ़ कर गीता को समझ लें।

उर्दू भाषा और लिपि में गीता का प्रकाशन वर्ष २००२ में हुआ था। इसकी दस हजार प्रतियाँ अब तक बिक चुकी हैं। अभी भी इसकी काफी माँग है। उर्दू के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, बंग्ला, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, उड़िया, असमिया तथा गुरुमुखी में भी गीता छप चुकी है। ये सभी गीता प्रेस में ही छपी हैं। गोरखपुर की अद्भुत प्रेस से पन्द्रह भाषाओं में भारतीय ज्ञान की पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। यह विश्व का एकमात्र संस्थान है जो बहुत ही कम मूल्य पर पुस्तकें प्रकाशित करता है। गीता प्रेस, गोरखपुर की एक विशेषता यह भी है कि किसी भी प्रकार का अनुदान यहाँ नहीं लिया जाता । पुस्तकों या 'कल्याण' जैसी पत्रिकाओं में कोई विज्ञापन भी स्वीकार नहीं किया जाता।

महाभारत पर डाक टिकिट जारी किये गये

महाभारत की कालजयी कथा पर गत २१ जनवरी को डाक–विभाग ने डाक–टिकिट जारी किये। जमशेदपुर के प्रधान डाक–घर से जारी इन १८ टिकिटों में महाभारत के प्रसंग दिखाये गये हैं। इनका कुल मूल्य ४३० रु है तथा इनके चित्र अलग–अलग शैलियों में बने हैं। एक डाक–टिकिट का चित्र राजस्थान की पिछवाई शैली में भी बना है। पाँचों पाण्डवों का माता–कुन्ती के साथ वन में जाने तथा अर्जुन के प्रायश्चित करने के प्रसंग भी इन डाक टिकिटों में हैं। एक टिकिट में योगेश्वर श्रीकृष्ण का विराट स्वरूप दिखाया गया है।

कुछ महीनों पहले रामायण पर भी डाक–टिकिट जारी किये गये थे।

कानपुर के तकनीकी संस्थान ने वेद–उपनिषदों पर वेब–साइट बनाई

कानुपर, खड़गपुर, दिल्ली, मुम्बई तथा चैन्नै के भारतीय तकनीकी संस्थान (आई.आई.टी.) तकनीकी शिक्षा के उत्कृष्ट एवं प्रतिष्ठित संस्थान हैं। लम्बे समय तक अपने देश में ये पाँच ही बी.टेक. की डिग्री देने वाले संस्थान थे। इनमें से एक आई आई टी कानपुर ने वेद, पुराण,उपनिषद,गीता, रामायण आदि प्राचीन ग्रन्थों के लिये एक वेबसाइट बनाई है। कम्प्यूटर या किसी भी नेट–कनेक्शन से इसे www.gitasupersite.iitk.ac.in पर खोला जा सकता है। अभी इसमें भगवद्गीता, रामचरितमानस, ब्रह्मसूत्र, योग–सूत्र, नारद–भक्ति सूत्र सहित नौ ग्रन्थ उपलब्ध हैं।

यह भारत और पूरी दुनिया की पहली **वेब साइट** है जिस पर प्राचीन भारतीय वाङ्मय मिल सकेगा।

उत्तराखण्ड के मदरसे अब संस्कृत पढ़ायेंगे

उत्तराखण्ड के मदरसों ने अब आज की दुनिया के साथ चलने का निर्णय किया है। इन मदरसों में अब संस्कृत तथा कम्प्यूटर विज्ञान भी पढ़ाया जायेगा। वहाँ के मदरसा बोर्ड ने गत १० जनवरी को यह निर्णय लिया है। उक्त दोनों ऐच्छिक विषय के रूप में शामिल किये गये हैं। इस प्रांत में २९७ मदरसे पंजीकृत हैं और इनमें अब तक गणित, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान तथा आयुष शास्त्र ऐच्छिक विषय थे।

तीन-मूर्ति चौक के नाम के साथ हैफा जुड़ा

तीन-मूर्ति चौक दिल्ली में है। यहाँ तीन भारतीय सैनिकों की प्रतिमाएं लगी हैं। सभी के हाथों में लम्बे-लम्बे भाले हैं। इस चौक का नाम बदल कर अब तीन मूर्ति-हैफा चौक हो गया है। इजरायल के प्रधानमंत्री श्री नेतान्याहू गत १४ जन. को चार दिनों की भारत यात्रा पर आये तो हवाई अड्डे से सीधे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ तीन मूर्ति चौक पहुँचे। दोनों राजप्रमुखों ने वहाँ श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी के साथ इस चौक का नाम **तीन मूर्ति-हैफा चौक** हो गया।

हैफा इजरायल का एक बन्दरगाह है। आखिर हैफा का तीन-मूर्ति चौक से क्या सम्बन्ध है? प्रथम विश्व युद्ध में जर्मन और तुर्क सेनाओं ने हैफा पर अधिकार कर लिया था। उस समय आज का इजरायल नहीं बना था तथा पूरे फिलिस्तीन पर अंग्रेजों का कब्जा था। विश्व-युद्ध में जर्मन, तुर्की तथा आस्ट्रिया एक ओर थे तथा इंगलैण्ड, फ्रांस, रूस आदि उनके सामने थे। अंग्रेजों की सेना में बड़ी संख्या में भारतीय जवान भी थे। हैफा को छुड़ाने के लिये अंग्रेज सेनानायकों ने भारत की सैनिक टुकड़ियों को ही भेजा। जोधपुर लांसर्स, हैदराबाद लांसर्स तथा मैसूर लांसर्स के जवान इस घुड़सवार सेना में थे। इनके पास हथियार के नाम पर तलवारें और भाले ही थे, जब कि जर्मन-तुर्क सैनिकों के पास आधुनिक राइफलें थीं। भारतीय सैनिकों ने अद्‌भुत वीरता दिखाते हुए हैफा को मुक्त करा लिया।

२३ सितम्बर १९१८ के दिन भारतीय सैनिकों को यह विजय प्राप्त हुई थी। इजरायल में २३ सितम्बर को हर साल हैफा-दिवस मनाया जाता है और भारतीय जवानों की बहादुरी को याद किया जाता है। **तीन मूर्ति चौक पर लगी तीन मूर्तियाँ उक्त सैनिक टुकड़ियों के सैनिकों की याद में ही लगाई गई थीं।**

हसन गाजी ने उन्तीस रोहिंग्याओं को घर में छिपा लिया

बंगाल में सेकुलरवादी सरकार है और जब 'सैंया भये कोतवाल तो डर काहे का।' इसलिये राज्य के जिहादी खुल कर राष्ट्र-द्रोही काम कर रहे हैं। म्यांमार में उपद्रव करने के बाद वहाँ से भगाये गये रोहिंग्या भारत में घुस आये हैं। केन्द्र सरकार इन उपद्रवियों को देश से बाहर करने की घोषणा कर चुकी है। उधर बंगाल के जिहादी उन्हें खुल कर शरण दे रहे हैं। अंग्रेजी दैनिक डीएनए (११ जन.)के अनुसार दक्षिण २४ परगना जिले के हरधा गाँव के हसन गाजी ने उन्तीस रोहिंग्याओं को अपने घर में शरण दे रखी है। आठ परिवारों के ये ढाई दर्जन रोहिंग्या छह महीनों से हसन गाजी के यहाँ आराम में डेरा डाले हुए हैं।

ये सभी रोहिंग्या म्यांमार से पहले बांग्लादेश पहुँचे। कुछ महीनों के बाद आईएसआई के एजेंटों ने उन्हें भारत जाने को कहा। इस पर ये सभी चुप-चाप रात के अंधकार में सीमा पार कर भारत में घुस आये। बंगाल के सेकुलरवादी राज्य में अब इनकी मौज हो गई है। पचास साल की जुबैदा ने बताया कि वे भारत में बड़े आराम से हैं। वे म्यांमार के राखीन प्रांत के संगमपाड़ा की रहने वाली हैं।

पाकिस्तान से आये हिन्दुओं की दर्दनाक कहानी

मिठी में दो भाइयों को दिन दहाड़े गोली मार दी गई

मिठी शहर बाड़मेर से कुल सौ कि.मी.दूर है पर पाकिस्तान में है। इस नापाकिस्तान में जो थोड़े बहुत हिन्दू बचे हैं वे मिठी जैसे कुछ कस्बों में हैं। यहाँ भी हिन्दुओं की स्थिति बड़ी दयनीय है। कुछ महीनों पहले दो नौजवान भाइयों दिलीप कुमार और चन्द्र कुमार को जिहादियों ने दिन दहाड़े गोली मार दी। इसके बाद किसी न किसी बहाने से हिन्दू मिठी छोड़ कर भारत आ रहे हैं। ऐसे कुछ शरणार्थियों से अंग्रेजी दैनिक डीएनए की संवाददाता अदिति नागर ने बात की। पाकिस्तानी हिन्दुओं की दुर्दशा का जो विवरण बात-चीत में सामने आया वह दैनिक के ११ जन. के संस्करण में प्रकाशित हुआ है।

मिठी से आये हिन्दू बन्धुओं ने बताया कि वहाँ किसी भी हिन्दू का मान-सम्मान सुरक्षित नहीं है। मेघवाल समुदाय पर तो आफत टूट पड़ी है। मेघवाल कन्या के युवा होते ही जिहादी उसका अपहरण कर उसे मुसलमान बना लेते हैं और किसी से भी उसकी शादी करा देते हैं। अन्य समुदायों की कन्याओं के साथ भी लगभग यही होता है। मुसलमान बनने का जबर्दस्त दबाव सभी हिन्दुओं पर है। अनेक लोग परेशान हो मुसलमान बनते भी जा रहे हैं।

शिया बोर्ड के अध्यक्ष ने कहा

मदरसे आतंकी पैदा कर रहे हैं

शिया वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष श्री वसीम रिजवी ने गत ९जनवरी को लखनऊ में कहा कि मदरसे आतंकवाद को बढ़ावा दे रहे हैं। इंजीनियर, डाक्टर व आईसीएस पैदा करने के स्थान पर ये मदरसे आतंकी पैदा कर रहे हैं।

श्री रिजवी शिया मुसलमानों के सम्मानित नेता हैं। उन्होंने बताया कि देश में एक लाख से अधिक मदरसे ऐसे हैं जो पंजीकृत नहीं हैं अर्थात् गैर-कानूनी हैं और ये मदरसे मौलवियों का खास बिजनेस है। चंदे से चलने वाले इन मदरसों में बचपन से ही कट्टरवाद पैदा कर दिया जाता है। श्री रिजवी ने प्रधानमंत्री, कैबिनेट सचिव तथा उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों को पत्र लिख कर ऐसे मदरसों पर रोक लगाने को कहा है।

कट्टरपंथियों और जिहादियों को श्री रिजवी के उक्त कथन पर पीड़ा होनी ही थी। दो दिन बाद ही 'जमीयत उल्माये हिन्द' ने उन्हें कानूनी नोटिस भेज दिया।

भारत और कश्मीर अलग-अलग हैं कश्मीर के सरकारी स्कूलों में

भारतीय थल सेनाध्यक्ष जनरल रावत ने कहा है कि कश्मीर में अलगाववाद का प्रमुख कारण प्रदेश की शिक्षा व्यवस्था, मदरसे तथा सोशल मीडिया हैं। १५ जनवरी के थल सेना दिवस के पहले गत १२ जनवरी को दिल्ली में पत्रकारों से बात-चीत करते हुए उन्होंने उक्त टिप्पणी की। जनरल रावत ने कहा कि राज्य में सरकारी स्कूलें बालकों को गलत शिक्षा दे रही हैं। सभी विद्यालयों में भारत और कश्मीर के मानचित्र अलग-अलग हैं। ये अलगाव का भाव जगाते हैं। थल-सेनापति ने यह भी बताया कि सोशल मीडिया पर गलत, भ्रम पैदा करने वाली तथा भड़काऊ बातें भेजी जा रही हैं। राज्य के सोशल मीडिया में भारत विरोधी अभियान चलाया जा रहा है।

जनरल रावत ने राज्य के मदरसों और मस्जिदों को भी कट्टरता के लिये जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि इन पर किसी न किसी तरह नियंत्रण किया जाना चाहिये।

थल-सेनाध्यक्ष ने जम्मू-कश्मीर की समस्या की जड़ को पकड़ा है और स्पष्ट रूप से अपनी बात रखी है। इस पर गम्भीरता से ध्यान देने की आवश्यकता है।

पद्मावत का समर्थन और लाल-सरकार का विरोध

सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ 'विचारों को प्रकट करने की आजादी' का झण्डा उठाये हुए है। लेकिन यह गठजोड़ खुद किसी को विचारों की आजादी नहीं देता। इनसे बड़े पाखण्डी सम्भवतः ढूंढे नहीं मिलेंगे। फिल्म पद्मावत के विरोध पर ये लाल-पीले हो रहे हैं लेकिन एक और फिल्म **लाल सरकार** पर रोक लगाने की माँग कर रहे हैं।

प्रश्न उठता है कि क्या है 'लाल सरकार' और इसमें क्या दिखाया गया है? इस फिल्म में कुछ पात्रों के माध्यम से वाम मोर्चे के शासन-कालों में हुए अन्याय, अत्याचार और भ्रष्टाचार को दिखाया गया है। निर्माता सुशील शरमन ने यह फीचर फिल्म बनाई है। उनका कहना है कि फिल्म ऐसे तथ्यों पर आधारित है जिन्हें कोई झुठला नहीं सकता।

लेकिन कामरेड कह रहे हैं कि लाल सरकार उन्हें बदनाम करने के लिये बनाई गई है और इसको सिनेमाघरों में नहीं दिखाया जाना चहिये।

मध्य प्रदेश के स्कूलों में आद्य शंकराचार्य की जीवनी पढ़ाई जायेगी

मध्य प्रदेश के विद्यालयों में आने वाले सत्र से आचार्य शंकर की जीवनी पढ़ाई जायेगी। प्रदेश में उनके जीवन और दर्शन को प्रचारित करने के उद्देश्य से एक यात्रा भी निकाली जा रही है। यह एकात्म यात्रा आचार्य शंकर की १०८ फीट ऊँची प्रतिमा के लिये सामग्री एकत्रित करने के लिये आयोजित हुई है। यह प्रतिमा प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल ओंकारेश्वर में स्थापित की जायेगी। यहाँ द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक पवित्र ज्योतिर्लिंग भी स्थित है।

आद्य शंकराचार्य की एकात्म यात्रा में आचार्य की चरण-पादुकाएं सिर पर रख कर पूरे प्रांत की पद यात्रा की जा रही है। आदि शंकराचार्य एक क्रांतिकारी महापुरुष थे। वे मात्र ३२ वर्ष की आयु तक ही जीवित रहे। इस छोटी सी अवधि में उन्होंने सम्पूर्ण देश को पुनः जाग्रत कर दिया। इसी अवधि में उन्होंने वेदों व उपनिषदों पर भाष्य भी लिखे।

इस बार जिहादियों ने स्वयंसेवक को शहीद किया

केरल में संघ कार्यकर्ताओं को लाल गिरोह और जिहादी दोनों के हमले झेलने पड़ रहे हैं। एक तो दोनों गिरोहों का गठजोड़ है और साथ ही राष्ट्रवाद का शंखनाद कर रहे स्वयंसेवक इनकी आँख की किरगिरी बने हुए हैं। बीती १६ जनवरी को कन्नूर में कन्नवम शाखा के मुख्य शिक्षक श्याम प्रसाद पर कार से आये कुछ बदमाशों ने तलवारों से हमला किया। तब सायंकाल के ५ बजे थे और वे पैदल बाजार जा रहे थे। लहुलुहान श्यामा प्रसाद ने वहीं दम तोड़ दिया।

इस बार पुलिस ने तत्परता दिखाई और चार जिहादियों को रात तक गिरफ्तार कर लिया। मोहम्मद, सलीम, अमीर और शहीम नाम के ये अपराधी **पापुलर फ्रंट ऑफ इण्डिया** से जुड़े हैं। 'सिमी' नाम के जिहादी गिरोह पर रोक लगने के बाद इससे जुड़े जिहादियों ने पीएफआई नाम का नया गिरोह बना लिया। ध्यान देने की बात है कि कन्नूर मार्क्सवादियों का गढ़ है और यहाँ जिहादियों के हाथों श्याम प्रसाद का शहीद होना कामरेड़ों और जिहादियों के गठजोड़ को सिद्ध करता है।

इतिहासकारों ने इतिहास फिर से लिखे जाने पर जोर दिया

गत १६ तथा २० जनवरी को राजस्थान विश्वविद्यालय में जाने-माने इतिहासकारों का दो दिनों का सम्मेलन हुआ। इसमें चुने हुए इतिहास के विद्वानों ने इतिहास को नये सिरे से लिखने की जरूरत बताई। उक्त सेमिनार का विषय था-'भारतीय इतिहास लेखनः सम्भावनाएं एवं चुनौतियाँ'। राजस्थान के जाने-माने इतिहासज्ञों ने इसमें अपने विचार रखे।

सभी विद्वान इस पर एक-मत थे कि भारत का इतिहास उन लोगों ने लिखा है जो आक्रमणकारी और लुटेरे थे। इसलिए उनका लेखन बुरी तरह पक्षपातपूर्ण है। उन्होंने भारतीय शासकों, उनके कार्यों, भारतीय जीवन-मूल्यों की केवल आलोचना ही की है और लुटेरों, अत्याचारियों तथा दुष्कर्मियों को महान् बताया है। कई तथ्यात्मक गलतियाँ भी इसमें हैं। उदाहरण के लिए कर्नल टॉड ने राजस्थान के इतिहास पर जो प्रसिद्ध पुस्तक लिखी है उसमें मीरा को महाराणा कुम्भा की पत्नी बताया गया है, जबकि भक्तिमती मीरा बाई का विवाह कुम्भा के पौत्र महाराणा भोज से हुआ था।

शबरी चरित पुनीत

मुनि मतंग की शिष्या थी इक नाम था उसका शबरी
त्रेता युग में प्रभु राम की करती थी प्रतीक्षा नित री।।

गुरु ने उसको मंत्र बताया राम नाम सुमिरन का।
जपते जपते होगा दर्शन निश्चय ही भगवन का।।

गांठ बांध कर मंत्र गुरु का राह तका करती थी।
आऐंगे प्रभु राम एक दिन माला जपा करती थी।।

निश्छल प्रीति देख शबरी की कुटिया पर आए श्रीराम।
धन्य हुई वह दर्शन करके देख रुप नयनाभिराम।।

अर्पण करती जाती प्रभु को चख चख कर वह मीठे बेर।
भाव भक्ति केभूखे हैं प्रभु, खाने में न लगाते देर।।

नवधा भक्ति का पाठ पढ़ाये शबरी को प्रभु शीलनिधान।
सुन कर धन्य हुई वह नारी देह त्याग पहुँची निज धाम।।

– **केदार चतुर्वेदी,** *मानसरोवर, जयपुर*

पाथेय–कण के विशेषांकों की कड़ी में एक और विशेषांक

आगामी १ जून को प्रकाशित होने वाला अंक

धर्म-संस्कृति विशेषांक

- ***धर्म और रिलीजन क्या है ?***
- ***संस्कृति क्या होती है ?***
- ***राष्ट्र, देश और राज्य में क्या अन्तर है ?***
- ***राष्ट्रीयता का क्या अर्थ है ?***
- ***सेकुलर–वाद क्या है, अल्पसंख्यक कौन होते हैं ?***

इसी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास इस अंक में किया जायेगा।

आप भी इन विषयों से सम्बन्धित अपनी रचना भेज सकते हैं।

अंतिम तिथि– ३० अप्रेल २०१८

– : विज्ञापन दरें :–

रंगीन कवर पृष्ठ अंतिम	**₹ ५,००,०००/–**
रंगीन कवर २ तथा ३	**₹ २,००,०००/–**
रंगीन पृष्ठ	**₹ १,००,०००/–**
सामान्य पृष्ठ (पूरा)	**₹ ५०,०००/–**
सामान्य पृष्ठ (आधा)	**₹ २५,०००/–**
सामान्य पृष्ठ (चौथाई)	**₹ १५,०००/–**

पंचांग- फाल्गुन माह

युगाब्द–५११९, विक्रमी–२०७४, शाके–१९३९
(१ फरवरी से १ मार्च २०१८ तक)

(कृष्ण पक्ष) **चतुर्थी का व्रत–** ३ फरवरी, **सीताष्टमी –** ८ फरवरी, **एकादशी–** ११ फरवरी, **भौम प्रदोष तथा महाशिवरात्रि व्रत –** १३ फरवरी, **अमावस्या–** १५ फरवरी (**पंचक प्रारम्भ** प्रातः ८.४० बजे), भारत में न दिखने वाला **खंडग्रास सूर्यग्रहण,**

(शुक्ल पक्ष) **फुलेरा दोज–** १७ फरवरी, **चतुर्थी –** १९ फरवरी, **पंचक समाप्त–**२० फरवरी (दोपहर २.०३ बजे), **होलाष्टक प्रारम्भ –** २३ फरवरी, **आमला एकादशी–**२६ फरवरी, **भौम प्रदोष–** २७ फरवरी, **पूर्णिमा** (क्षय तिथि) तथा **होलिका दहन–** १ मार्च

चन्द्रमा – १ फरवरी स्वराशि **कर्क** में, २–३ फर. **सिंह,** ४–५ फर. **कन्या,** ६ से ८ फर. **तुला,** ९–१० फर. नीच की राशि **वृश्चिक** में, ११ से १३ फर. **धनु,** १४–१५ फर. **मकर** राशि में, १६ से १८ फर. **कुंभ** में, १९–२० को **मीन,** २१–२२ **मेष,** २३–२४ को उच्च की राशि **वृष** में, २५–२६ **मिथुन,** २७–२८ स्वराशि **कर्क** में तथा १ मार्च को **सिंह** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

फाल्गुन माह में **शनि** व **गुरु** तथा **राहु** व **केतु** पूर्ववत क्रमशः धनु व तुला तथा कर्क व मकर राशि में रहेंगे। इसी प्रकार **मंगल** वृश्चिक राशि में यथावत बने रहेंगे। **शुक्र** ३ फर. को पश्चिम में उदय होकर ६ को प्रातः ११.५९ बजे मकर से कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे। **सूर्य** १२ फरवरी को रात २.४८ बजे तथा **बुध देव** १५ फरवरी को प्रातः ३.२४ बजे मकर से कुंभ राशि में प्रवेश करेंगे।

जैसलमेर में
मातृशक्ति का भव्य पथ संचलन

गत ७ जनवरी को राष्ट्र सेविका समिति की जैसलमेर इकाई की ओर से पथ संचलन निकाला गया । गांधी कालोनी स्थित आदर्श विद्या मन्दिर से प्रारम्भ होकर संचलन शहर के मुख्य मार्गों से होता हुआ हनुमान चौराहे के पास सागरमल गोपा स्कूल पहुँच कर सम्पन्न हुआ।

यहाँ सेविका समिति की अखिल भारतीय प्रमुख कार्यवाहिका सीता अन्नादान्म् ने संचलन में शामिल सेविकाओं को सम्बोधित किया।

संचलन का स्थानीय नागरिकों ने स्थान-स्थान पर पुष्पवर्षा कर वन्दे मातरम् तथा 'भारत माता की जय' का घोष लगाकर भव्य स्वागत किया। जैसलमेर शहर में निकले सेविका समिति के प्रथम संचलन की विशेषता राजपूती पोशाक पहने एक वाहिनी थी। भारत माता एवं हाड़ी रानी की झांकी भी आकर्षण का केन्द्र रही। संचलन में पाँच सौ से अधिक सेविकाओं ने भाग लिया।

'स्वामी विवेकानन्द और सुभाष बोस' पर गोष्ठी

गत २३ जनवरी को पाथेय कण संस्थान की ओर से एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के सभागार में आयोजित इस गोष्ठी का विषय 'स्वामी विवेकानन्द और सुभाष बोस' था। उक्त विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रज्ञा प्रवाह के श्री राजेन्द्र चड्ढा ने कहा कि सुभाष बोस पर स्वामी विवेकानन्द का विशेष प्रभाव रहा। इसी कारण वे जीवन पर्यन्त देश सेवा में लगे रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री के.के.पाठक ने की। उन्होंने कहा कि सुभाष बोस ने देश सेवा के लिए परिवार तथा आईसीएस जैसी नौकरी तक त्याग दी।

राजस्थान के लोकायुक्त श्री एस.एस.कोठारी कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया से जुड़े पत्रकारों के अलावा बड़ी संख्या में प्रबुद्ध नागरिक भी उपस्थित थे।

सूर्य सप्तमी पर पाँच लाख छात्रों ने सूर्य नमस्कार किये

गत २४ जनवरी को देश भर में सामूहिक सूर्य नमस्कार महायज्ञ सम्पन्न हुआ। राजस्थान में विभिन्न स्थानों पर पाँच लाख से अधिक नौजवानों ने मंत्र के साथ सूर्य नमस्कार किये। सूर्य रथ सप्तमी पर प्रतिवर्ष क्रीड़ा भारतीय यह आयोजन करती है। इसमें स्थानीय स्कूलों, कॉलेजो एवं विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ आमजन भी उत्साहपूर्वक शामिल होते हैं।

राजधानी जयपुर के सेन्ट्रल पार्क में प्रातः ६ बजे सूर्य नमस्कार का कार्यक्रम रखा गया था। 'गुरुकुल योग संस्थान' और 'क्रीड़ा भारती' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के पन्द्रह सौ विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में क्रीड़ा भारती के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री गोपाल सैनी, जयपुर के महापौर श्री अशोक लाहोटी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

पाँच सौ से अधिक स्कूलों में भी सूर्य नमस्कार हुये।

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी - १.अ, २.द, ३.ब, ४. अ, ५. अ, ६. ब, ७.अ, ८.स, ९.अ,१०.स

उत्तर महापुरुष पहचानो- वीर सावरकर

सेवा भारती ने बाला साहब को याद किया

उदयपुर स्थित सेवा भारती चिकित्सालय ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तीसरे सरसंघचालक बाला साहब देवरस पर एक व्याख्यानमाला प्रारम्भ की है। इसी कड़ी में गत १३ जनवरी को 'बाला साहब का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' विषय पर सेवा भारती के क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री मूलचन्द सोनी ने प्रकाश डाला।

इस अवसर पर प्रदेश के गृहमंत्री श्री गुलाबचन्द कटारिया मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। क्षेत्रीय संघचालक डा.भगवती प्रकाश शर्मा कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

उदयपुर में प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन सम्पन्न

गत २२ जनवरी को उदयपुर में बसंत पंचमी के पावन अवसर पर प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। उदयपुर स्थित सुखाड़िया रंगमंच रखे गये कार्यक्रम की मुख्य वक्ता साध्वी ऋतम्भरा थीं। प्रबुद्ध नागरिकों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कार मजबूत होंगे तभी हमारी सांस्कृतिक विरासत मजबूत हो पायेगी। हमें संयुक्त परिवार व्यवस्था को बढ़ावा देकर नयी पीढ़ी को उसका महत्व समझना चाहिये।

मकर संक्रान्ति पर बाड़मेर में पथ संचलन

गत १४ जनवरी को मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर बाड़मेर शहर के स्वयंसेवकों ने पथ संचलन निकाला। संचलन के बाद हुई सभा को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह श्री दत्तात्रेय होसबोले ने सम्बोधित किया।

उन्होंने कहा कि कश्मीर से कन्याकुमारी और कच्छ से कोहिमा तक हम एक हैं, इस विचार को ध्यान में रखकर हमें भारत के भविष्य के लिए एक रहना होगा।

हेमू कालाणी का शहादत दिवस मनाया

गत २१ जनवरी को 'भारतीय सिन्धु सभा' और 'अमर शहीद हेमू कालाणी सेवार्थ समिति' के संयुक्त तत्वावधान में जयपुर में शहीद हेमू कालाणी का ७६वां बलिदान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री अशोक परनामी थे। इससे पूर्व सिन्धु सभा की ओर से ही जयपुर स्थित अमर जवान ज्योति पर दीपदान का कार्यक्रम तथा शहर भर में भिन्न-भिन्न स्थानों पर रक्तदान शिविर, प्रभात फेरी जैसे अनेक कार्यक्रम भी रखे गये थे।

धर्म संसद में

अस्पृश्यता को मिटाने का संकल्प

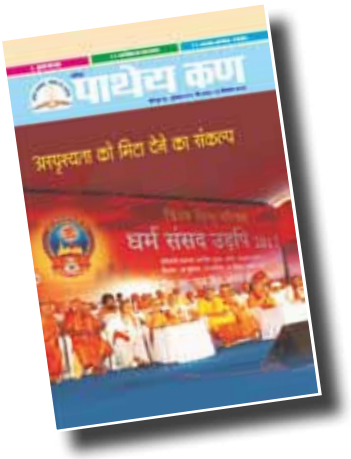

अंक संदर्भ : १६ दिसम्बर २०१७

नवम्बर में उडूपी में आयोजित धर्म संसद में पूरे देश के प्रमुख धर्माचार्यों ने अस्पृश्यता को पूर्णतः मिटा देने का संकल्प लिया। यह एक अच्छी पहल है। भारत में रहने वाले सभी हिन्दू भाई-भाई हैं। हमारे यहाँ कोई दलित, पतित, छोटा व अस्पृश्य नहीं है।

***-धनराज लोहार,** रोहट (पाली)*

जात-पात, पंथ-सम्प्रदाय आदि से ऊपर उठ कर समरस समाज के निर्माण के लिए कमर कसनी होगी।

***-मानमल्ल नाहर,** लाडनूं*

उडूपी की धर्म संसद में अस्पृश्यता जैसी अमानवीय पृथा को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए धर्माचार्यों के द्वारा एकमत होकर संकल्प लिया जाना नव-जागरण का सूचक है।

***-ईश्वरलाल धाकड़,** लक्ष्मीपुरा,प्रतापगढ़*

महापुरुषों को जातिगत आधार पर बांटना गलत है। महापुरुष किसी जाति विशेष के न होकर पूरे देश के होते हैं। अतः सभी महापुरुषों की जयंतियाँ सामूहिक रूप से मनाने का धर्मसंसद का प्रस्ताव स्वागत योग्य है।

***-देवकीनन्दन शर्मा,** भगेगा (सीकर)*

लम्बे समय तक भरी बसों के पीछे लटक कर सफर करने के बाद इनको इस तरह सोने का रोग हो गया है।

साभार-टाइम्स ऑफ इण्डिया

राजेन्द्र बाबू की महानता

बाल जगत स्तम्भ में 'मिट्टी का सम्मान' पाठक की देशभक्ति की भावना को उद्वेलित करने वाला है। देश के शीर्षस्थ पद पर रहते हुए भी देश की मिट्टी का मान-सम्मान करना राजेन्द्र बाबू की महानता थी।

***-टेकचन्द शर्मा,** झुंझुनू*

लोकनायक रामबख्श

महान क्रांतिकारी रामबख्श सिंह के बलिदान की जानकारी दिसम्बर के द्वितीय अंक से प्राप्त हुई। ऐसे क्रांतिकारी को शत शत नमन जिसने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की परवाह तक नहीं की।

***-प्रभु सिंह राणावत,** पाली*

तुलसी की व्यथा

तुलसीदास जी ने श्रीराम जन्मभूमि पर बाबरी ढ़ांचा बनाने का उल्लेख व विरोध अपनी रचनाओं में किया है, यह जानकारी प्रथम बार ही हुई।

***-श्री कृष्ण कुमार,** बीदासर, चूरू*

महान क्रांतिकारी

अंक में प्रकाशित मेघालय के वीर ऊ कियांग की शहादत पर प्रकाशित सामग्री प्रेरणादायक थी।

***-प्रवीण रावल,** सावला, डूंगरपुर*

उपयोगी प्रश्नोत्तरी

प्रत्येक अंक में दी जाने वाली प्रश्नोत्तरी ज्ञानवर्द्धक है। कई नवीन जानकारियाँ इससे मिलती हैं। बच्चों के लिए प्रारम्भ की गई 'बाल प्रश्नोत्तरी' से बालकों में भी पाथेय कण पढ़ने की रुचि जाग्रत हो रही है।

***-पुष्पेन्द्र नायर,** कांकरोली, राजसमन्द*

प्रेरक चित्रकथा

वीर सावरकर के जीवन पर अंक में दी जा रही चित्रकथा बच्चों ओर युवाओं में देशप्रेम की भावना का संचार करने वाली है।

***-मदन चौधरी,** झोटवाड़ा, जयपुर*

कविता में एकात्ममानववाद

डा.ऋषि कुमार सिंघल की कविता में सरल शब्दों में एकात्म मानववाद की सिद्धान्त आ गया है। कविता के माध्यम से कठिन विषय को भी आसानी से समझा जा सकता है।

***-लादूराम चौहान,** कृष्णा कालोनी, ब्यावर*

सोशल मीडिया से

कीजिए तनिक विचार

* १३७८ में भारत से एक हिस्सा अलग हुआ और इस्लामिक राष्ट्र बना।
  – नाम है ईरान
* १७६१ में भारत से एक हिस्सा अलग हुआ और इस्लामिक राष्ट्र बना।
  – नाम है अफगानिस्तान
* १९४७ में भारत से एक हिस्सा अलग हुआ और इस्लामिक राष्ट्र बना।
  – नाम है पाकिस्तान
* १९७१ में भारत से १९४७ नें टूटा एक और हिस्सा इस्लामिक राष्ट्र बना ।
  – नाम है बांग्लादेश
* १९५२ से १९९० के बीच भारत का एक राज्य इस्लामिक हो गया।
  – नाम है कश्मीर

और अब उत्तरप्रदेश, असम और केरल इस्लामिक राज्य बनने की कगार पर है। हम जब भी हिन्दुओं को जगाने की बात करते हैं, सच्चाई बताते हैं तो कुछ लोग हमें आरएसएस, विश्व हिन्दू परिषद, शिव सेना और बीजेपी वाला कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं।

***–गोपाल मोदी,** अजमेर*